Indian J. Soc. & Pol. 11 (02):75-78:2024 **ISSN: 2348-0084 (PRINT)**
February-June 2023 (31 July 2024) **ISSN: 2455-2127(ONLINE)**

जननायक कर्पूरी ठाकुर का समाजवादी व्यक्तित्व : दृष्टि एवम् विमर्श

विभा कुमारी[1], गिरीश चंद पाण्डेय[2]

[1]शोध अध्येता, राजनीति विज्ञान, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर, उ0प्र0, भारत
[2]प्रोफेसर एवम् अध्यक्ष राजनीति विज्ञान विभाग,एस. डी. पी. जी. कॉलेज, मठ–लार, देवरिया, उ00प्र0, भारत

ABSTRACT

व्यक्ति की सामाजिक पहचान उसके पद और सत्ता से न होकर उसके कर्मों से होती है। अभावों में जीवन व्यतित करते हुए भी लोगों ने अपनी सोच और संस्कारों के बल पर इतिहास में अपना नाम अमर करा लिया है। इतिहास इस बात का गवाह है कि महर्षि अगस्त और वशिष्ठ ने, कौटिल्य एवं सुकरात ने प्लेटो एवम् अरस्तु आज से सैकड़ो साल पूर्व किये गये अपने समाज सेवा और राष्ट्र निर्माण के कार्यो से ही सम्पूर्ण विश्व के जन–मन में आज भी आदरपूर्वक पूजीत है। इसके पीछे उनकी वंश परम्परा अथवा सत्ता और सम्पत्ति कारण न होकर जनसरोकारों के प्रति उनकी गहरी सम्बद्धता ही उत्तरदायी है।

KEYWORDS: *समाजवाद, कर्पुरी ठाकुर, बिहार,,*

व्यक्ति की सामाजिक पहचान उसके पद और सत्ता से न होकर उसके कर्मों से होती है। अभावों में जीवन व्यतित करते हुए भी लोगों ने अपनी सोच और संस्कारों के बल पर इतिहास में अपना नाम अमर करा लिया है। इतिहास इस बात का गवाह है कि महर्षि अगस्त और वशिष्ठ ने, कौटिल्य एवं सुकरात ने प्लेटो एवम् अरस्तु आज से सैकड़ो साल पूर्व किये गये अपने समाज सेवा और राष्ट्र निर्माण के कार्यो से ही सम्पूर्ण विश्व के जन–मन में आज भी आदरपूर्वक पूजीत है। इसके पीछे उनकी वंश परम्परा अथवा सत्ता और सम्पत्ति कारण न होकर जनसरोकारों के प्रति उनकी गहरी सम्बद्धता ही उत्तरदायी है।

समकालीन राजनीतिक परिदृश्य में ऐसा ही एक नाम सामाजिक न्याय के ध्वजवाहक, समाजवादी विचारधारा से ओत–प्रोत सहज एवम् सरल व्यक्तित्व के धनी स्व कर्पूरी ठाकुर का है, जिनके विचारों और कार्यों में भी समाज के सबसे अन्तिम व्यक्ति के उत्थान की चिन्ता साफ–साफ झलकती है। उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन गाँव के गरीब किसान और मजदूर की बेहतरी के लिए लड़ाई लड़ने और उनकी जीवन–दशा सुधारने मे खपा दिया स कर्पूरी ठाकुर ने बिहार राज्य को अपने जन संघर्षों का केन्द्र बनाकर जनवादी राजनीति की शुरुआत की तथा यह स्वीकार किया कि भौतिक संसाधनों का असमान वितरण ही आम जन की विपत्ति का मूल कारण है। जिससे उत्पन्न असमानता अस्पृश्यता, भ्रष्टाचार तथा स्वार्थी आचरण जैसे अनैतिक तत्व सामाजिक समरसता के ढ़ाचे को छिन्न–भिन्न कर रहे हैं।

स्वतन्त्रता के पश्चात हमारे नेताओं और संविधान निर्माताओं ने अपने पूर्वजों के सामाजिक सद्भाव और जनकल्याण की नीति को मूर्त रूप देने के लिए संविधान को प्रस्तावना के माध्यम से ही भारत में सामाजिक अर्थव्यवस्था की नीति को सर्वसम्मत से अंगीकार किया और यह संकल्प लिया कि भारत का विकास समाजवादी अर्थव्यवस्था के रास्ते पर चलते हुए ही पूरा किया जा सकेगा। परन्तु दुर्भाग्य से कुछ प्रभावशाली लोगों और वर्गों के लोगों के लोभ ओर उदासीनता के कारण ऐसा सम्भव नहीं हो सका तथा देश के समस्त प्राकृतिक संसाधन व्यक्तिगत स्वार्थपरता की भेंट चढ़ते रहे।

कर्पूरी ठाकुर बिहार के प्रमुख समाजवादी नेताओं में से एक थे जिन्होंने सामाजिक न्याय के विचार को गति प्रदान की और पिछड़ी जाति की विकस की राजनीति की आवश्यक पृष्ठ भूमि तैयार की लोहिया वादी राजनीतिक परंपरा से प्रभावित श्री ठाकुर ने बिहार में पारंपरिक राजनीति की प्रमुख अवधारणा और कल्पना को चुनौती देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और अपने राजनीति कार्यक्रम को आगे बढ़ना शुरू किया।

समाजवाद – वर्तमान समय में सबसे अधिक लोकप्रिय शब्द है– समाजवाद, जिसका सर्वप्रथम प्रयोग 1803 ई० में इटली में किया गया लेकिन इसका संदर्भ आधुनिक नहीं था। सन् 1827 ई० में श्लंदन को आपरेटिव मैगजीन' में राबर्ट ओवन के विचारों को व्यक्तिवादी और उदारवादी विचारों के विरुद्ध भावों को प्रदर्शित करने के लिए किया गया । सन् 1833 ई० में फ्रांस की एक पत्रिका 'लेम्लोब' में सेण्ट साइमन के सिद्धांत को स्पष्ट करने के लिए भी इस शब्द का प्रयोग किया गया था।

सन् 1840 तक 'समाजवाद' शब्द का सम्पूर्ण यूरोप में प्रयोग होने लगा और व्यापक रूप में इसका अर्थ यह समझा जाने लगा कि उत्पादन के साधनों यथा पूंजी, भूमि अथवा संपत्ति पर पूरे समाज का नियंत्रण अथवा स्वामित्व होना चाहिए। फेड ब्रमले कहते है कि "समाजवाद व्यक्तिगत हितों को सामाजिक हितो के अधीन बना देता है। समाजवाद आर्थिक छेत्र में प्रतिस्पर्धा का विरोध करता है स

1: Corresponding Author

समाजवाद के प्रसिद्ध लेखक एम० डी० लैविलो ने अपनी पुस्तक 'सोशलिज्म टुडे' में समाजवाद का लक्षण बताते हुए लिखा है कि "प्रत्येक समाजवादी सिद्धांत का एकमात्र लक्ष्य समाजवादी दशाओं में विस्तृत पैमाने पर समानता स्थापित करना होता है तथा उन सिद्धांतों को राज्य कानूनों के माध्यम से पूर्ण कराने का प्रयत्न करता है।"

प्रत्येक समाज की एक पृथक सामाजिक संरचना होती है जो उसकी विभिन्न रीति–रिवाजों, परंपराओं, व संस्कृतियो से निर्मित होती है। इसलिए किसी भी व्यक्ति का व्यक्तित्व, व्यवहार, चिंतन आदि को समझने के लिए उस व्यक्ति की सामाजिक संरचना व सामाजिक परिवेश को जानना जरूरी होता है सी. राइट मिल्स ने अपने समाजशास्त्रीय कल्पना में व्यक्ति के जीवनवृत तथा समाज के इतिहास के आपसी संबंधों को समझने के लिए सामाजिक संरचना, सामाजिक स्तरीकरण और सामाजिक प्रक्रियाओं को भी महत्वपूर्ण कहा है।

सामाजिक परिवेश और प्रभाव न केवल व्यक्ति विशेष के व्यवहार और भावनाओं पर प्रभाव डालता है, अपितु व्यक्ति के विभिन्न कार्यक्षेत्रों पर भी उसका प्रभाव देखने को मिलता है। जिस व्यक्ति की पृष्ठभूमि रोज कमाकर खाने वाली, श्रमजीवी और कामगार की होगी उस व्यक्ति के चिंतन स्तर मात्र दार्शनिक या सिद्धांतकार के नहीं होते हैं। वह सामाजिक जड़ता और आर्थिक समस्याओं को दूर करने के लिए कार्यक्रमों पर आधारित योजना और आंदोलनों का ज्यादा पक्षधर होगा। किसी व्यक्ति का व्यक्तित्व या विचार को जानने के लिए हमें उस व्यक्ति समुदाय की सामाजिक संरचना में हैसियत व उसके सामाजिक परिवेश को ध्यान में रखना जरूरी होता है।

भारत में जाति व्यवस्था में 19 वीं सदी की शुरुआत एवं स्वतंत्रता के बाद से ही काफी बदलाव हुए है क्योंकि इस दौरान बिहार मैं कई सामाजिक आंदोलन हुए। ये आंदोलन धार्मिक जड़ताओं एवं जाति के विरोध में हुए। इस प्रकार के आंदोलनों ने जाति संरचना की प्रकृति को परिवर्तित करने का काम किया।

बिहार में पिछले सत्तर वर्षों में तमाम बदलावों के बावजूद जाति लोगों के जीवन और आजीविका को प्रभावित करने वाली सबसे महत्वपूर्ण संस्था बनी हुई है। बिहार के अधिकांश हिस्सों में कृषि भूमि, आजीविका और राजनीतिक प्रभुत्व का सबसे महत्वपूर्ण स्रोत रहा है। अंग्रेजी शासन की जमींदारी प्रथा की वजह से इसका स्वामित्व हमेशा अगड़ी जातियों के पास रहा है। जबकि पिछड़ी जातियों के पास तुलनात्मक रूप से छोटी जोत थी। फ्रैकले (1989) में लिखते है कि अंग्रेजों ने बिहार में जो भी छोटे–मोटे बदलाव किये थे, उनमें पिछड़ी जातियों को दरकिनार कर दिया गया था।

कर्पूरी ठाकुर का राजनीति में प्रवेश बिहार में समाजवादी विचारधारा के बढ़ते प्रभाव के साथ हुआ । भूमि सुधार, सामाजिक समानता और दलितों के उत्थान पर जोर देने वाले समाजवादी आंदोलन ने वंचित जनता के बीच प्रतिध्वनि पाई। भारत छोड़ो आंदोलन में श्री ठाकुर की प्रारंभिक भागीदारी और तत्पश्चात समाजवादी हलकों में भगीदारी ने उन्हें उभरते राजनीतिक परिदृश्य में बदलाव के प्रस्तावक के रूप में स्थापित किया। राममनोहर लोहिया और जयप्रकाश नारायण जैसे नेताओं से प्रभावित होकर श्री ठाकुर की समाजवादी विचारधाराओं के शुरुआती संपर्क ने सामाजिक न्याय के प्रति उनकी प्रतिबद्धता की नींव रखी। संसाधनों और अवसरों के समान वितरण पर ध्यान देने वाले समाजवाद के सिद्धांत श्री ठाकुर के राजनीतिक कैरियर के मार्गदर्शक सिद्धांत बन गए।

बिहार की विवादास्पद राजनीति से निपटने में अद्वितीय कौशल और क्षमता के बावजूद कर्पूरी ठाकुर की जातिगत पृष्ठभूमि ने हमेशा उनके नेतृत्व को प्रभावित किया। उनके जीवनकाल के दौरान और उसके बाद में जिन सवालों पर बहस जारी है, वे विहार में पिछडी जाति की राजनीति को मजबूत करके कांग्रेस विरोधी राजनीति की नींव को आकार देने में उनके प्रभाव के इर्द– गिर्द घूमते रहे। उन्होंने मध्यस्थ जातियों की राजनीतिक आकांक्षाओं का प्रतिनिधित्व किया और राज्य में उच्च जाति वर्ग की राजनीति के लिए एक विकट चुनौती पेश की। कर्पूरी ठाकुर राज्य के अग्रणी समाजवादी नेताओं में से एक थे, जिन्होंने सामाजिक न्याय के विचार को गति प्रदान की और पिछड़ी जाति की राजनीति की रूपरेखा को प्रभावित किया । 1960 के दशक के दौरान, वह मध्यवर्ती (पिछड़ी) जातियों की राजनीतिक आकांक्षाओं के प्रतिनिधि के रूप में उभरे और इस तरह कॉंग्रेस (आई), कॉंग्रेस (ओ) और जनसंध जैसे राजनीतिक दलों के लिए एक गंभीर चुनौती पेश की।

हालाँकि जाति आधारित लामबंदी की अभूतपूर्व सफलता और अन्य पिछड़ी जातियों के पक्ष में इसके व्यापक निहितार्थ 1990 के दशक के बाद बहुत अधिक ध्यान देने योग्य हो गए । लेकिन देश के विभिन्न हिस्सों में प्रगति ने विविध प्रक्षेपवक्र हासिल कर लिए। बिहार में अन्य पिछड़ा वर्ग से संबंधित कुछ नेताओं ने पिछड़ी जाति की राजनीति के सामाजिक – राजनीतिक स्वरूप को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी जो दशकों से फली – फूली और अंततः1990 के दशक से शासक राजनीति के रूप में उभरी। पिछड़ी जाति की राजनीति के अपने आकलन में, बिहार एक समाजवादी प्रयोगशाला रहा है, जहाँ कॉंग्रेस के प्रभुत्व के शुरुआती चरण के दौरान भी समाजवादी पार्टियों ने मिलकर 20 से 25 प्रतिशत वोट हासिल किए थे। समाजवादी पक्ष मैं, कर्पूरी ठाकुर ने ओ.बी.सी. के दावे में एक प्रमुख भूमिका निभाई और उनकी गतिविधियों ने कॉंग्रेस की कीमत पर एस. एस. पी. के उदय को समझाया। विपरित परिस्थितियों के बावजूद राम मनोहर लोहिया की राजनीति से प्रभावित होकर, कर्पूरी ठाकुर बिहार में समाजवादी राजनीति के एक युवा और प्रेरक चेहरे के रूप मैं उभरे। समाजवादी राजनीतिक परंपरा निचली जातियों के आंदोलनों के बीच संबंधों के बारे में लोहिया की प्रभावी अभिव्यक्ति सामाजिक न्याय और अनुष्ठान भेदभाव के मुद्दों पर निचली जातियों की क्षैतिज लामबंदी की राजनीतिक क्षमता को पहचानना भी ठाकुर की राजनीति का मार्गदर्शक सिद्धांत बन गया।

समाज के वंचित वर्ग के विभिन्न मुद्दों और चिंताओं पर विधानसभा के अंदर उनका उग्र और तर्कपूर्ण योगदान समाज और राजनीति के हाशिए पर मौजूद लोगों और समुदायों के साथ उनके सीधे जुड़ाव से मेल खाता था । सामाजिक न्याय की अवधारणा जन– केन्द्रित विकास का विचार और इसके इर्द–गिर्द लामबंदी उनके विचारों से अभिन्न रूप से जुड़ी हुई थी। आचार्य नरेन्द्रदेव, लोकनायक जयप्रकाश नरायण और डा० राममनोहर लोहिया के सपनों के समाजवादी समाज की स्थापना की दिशा में कर्पूरी ठाकर ने जो यात्रा शुरू की थी वह बगैर किसी बाधा के जीवनपर्यंत जारी रही। उस यात्रा में अनेकों पड़ाव आयें, जिस दौरान वे सोशलिस्ट पार्टी तथा उसकी प्रशाखाओं से पूरी लगन के साथ जुड़े रहें। प्रारंभ में सोशलिस्ट पार्टी फिर प्रजा सोशलिस्ट पार्टी, संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी, समतावादी एकतावादी सोशलिस्ट पार्टी, भारतीय क्रांति दल जनता पार्टी, लोकदल दलित मजदूर, किसान पार्टी आदि अनेक पड़ाव आए लेकिन सबके मूल मे समाजवाद का सिद्धांत ही सर्वोपरी रहा।

समाजवादी समाज की स्थापना की जो दिशा तय हो गई, उसमें फिर कोई बदलाव नहीं आया। श्री ठाकुर आजीवन दलितों के दर्द और उपेक्षितों और कमजोर वर्गों के लोगों को अपना जिगर का टुकड़ा समझा। प्रत्येक मोड़ पर संघर्षों को पार करते हुए जीवनपर्यंत निर्धनों, बेरोजगारों एवं मजदूरों के कल्याण के लिए कुछ कर गुजरने की उनमें जिजीविषा थी। यही कारण था कि प्रारंभ से ही श्री ठाकुर समाजवादी विचारधारा के अनुयायी रहे। हालाँकि बिहार में समाजवादी आंदोलन का जनक स्व भूपेन्द्र नरायन मंडल को माना जाता है। परंतु कर्पूरी ठाकुर का जनमानस पर अद्भुत प्रभाव था। समाजवादी आंदोलन में जब भूमि आंदोलन, भाषा आंदोलन, जाति तोड़ो आंदोलन, दाम बांधो आंदोलन, रोजगार पाने के अधिकार को मौलिक अधिकार मे शामिल करो आंदोलन, ग्ररीबी बेकारी मिटाओं आंदोलन, हिमालय बचाओ आंदोलन और अलाभकर जोतों से भू– लगान माफी आंदोलन जैसे कार्यक्रम चलते थे तो लगता था कि बिहार में भूचाल आ गया है और प्रत्येक आंदोलन में कर्पूरी ठाकुर का नेतृत्व निखरकर उभरता था।

कर्पूरी ठाकुर का व्यक्तित्व 'अथर्ववेद के दिव्यमंत्र–कृंत में दक्षिणे हस्ते जयों में सत्य आहित' से अनुप्राणित है, जिसका तात्पर्य है– मेरे दाएँ हाथ में कर्तव्य है और बाएं हाथ में विनय । अपने इसी व्यक्तित्व से उत्प्रेरित कर्पूरी ठाकुर समाजसेवी, स्वतंत्रता सेनानी तथा प्रतिपक्ष के नेता के रूप में पूरे बिहार के जनमानस पर छाये रहे।

वे सत्ता में रहे हो या प्रतिपक्ष में एक क्षण के लिए भी अपने घोषित लक्ष्य से अलग नहीं हुए। प्रतिपक्ष में रहते हुए उन्होंने लोहिया के प्रसिद्ध कथन 'जिन्दा कौमे पाँच साल तक इंतजार नहीं करती' को चरितार्थ करने में निरंतर लगे रहे। अन्याय एवं आतंक के खिलाफ जनता को सचेत करते रहे। जब वे सत्ता में होते थे, तब बिहार के अधिकार के लिए केन्द्र से लड़ते थे और विपक्ष में रहते थे तब भी बिहार के सवाल पर केन्द्र से लड़ते थे। लोकहित के लिए वे संघर्ष करने में तनिक भी विलंब नहीं करते थे।

यह कहना अनुपयुक्त नहीं होगा कि देश में डा० राममनोहर लोहिया, जयप्रकाश नरायण, आचार्य नरेन्द्र देव आदि नेताओं ने यादि समाजवादी आंदोलन का आह्वान किया और उसे सैद्धांतिक आधार प्रदान किया तो कपूरी ठाकुर ने इसे मूर्त रूप दिया। कर्पूरी ठाकुर के सिवाय लोहिया के बाद कोई अन्य व्यक्ति न था जो समाजवाद को किताब से निकालकर, व्यावहारिक जगत में धरातल पर उतार सके इसलिए वे हर तरह की विषमता के खिलाफ लड़ते रहे वह चाहे समाजिक हो अथवा देश के अंदर की क्षेत्रीय विषमता जिससे राष्ट्र–राज्य में विरोधाभाष की स्थिति पैदा न हो सके। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि कांग्रेस के अलावा भी अन्य लोगों व पार्टियों का भारत की स्वतंत्रता में योगदान रहा है। निसंदेह भारत को आजाद कराने में समाजवादियों की भूमिका काफी महत्वपूर्ण रही है। भारत में समाजवादी आंदोलन को मूर्त रूप देने मे लोहिया प्रथम व्यक्ति थे। लोहिया के अवसान के बाद समाजवादी आंदोलन में काफी सशक्त भूमिका का निर्वाहन कर्पूरी ठाकुर के द्वारा किया गया। इस संबंध में समाजवादी नेता इन्द्र कुमार का मत है कि कर्पूरी ठाकुर भारतीय राजनीति की एकरसता को समाप्त कर लोकतांत्रिक व्यवस्था और संसदीय व्यवस्था को मजबूत करने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर कांग्रेस का विकल्प खोजना चाहते थे।

उनके कार्य योजना में समाजवादी झलक दृष्टिगोचर होता था – चाहे वह आरक्षण गजट हो, कृषि–सुधार हो, शिक्षा का लोकतंत्रीकारण हो, वंचितों एवं शोषितों के उत्थान की बात हो सभी में समाजवाद की छाया प्रतिबिंबित होती थी।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि कर्पूरी ठाकुर के समाजवादी विचार या समाजवादी व्यक्तित्व को न तो एक भौगोलिक परिधि के दायरे में सीमित रखकर मूल्यांकन किया जा सकता न ही किसी विशेष संप्रदाय या परंपरा के अंतर्गत रख कर । असीमित व्यक्तित्व के धनी कर्पूरी ठाकुर उन सभी बंधनों और संकीर्णताओं से ऊपर थे इसीलिए कर्पूरी ठाकुर के तमाम क्रियाकलाप और उनके व्यक्तित्व का मूल्यांकन संपूर्ण मानव तथा समाज के व्यापक कल्याण के संदर्भ में किया जाना चाहिए। 1940 के दशको के मध्य से 1980 के दशक के मध्य तक चार दशकों तक फैली कर्पूरी की गतिशील राजनीति ने समाज के निचले तबके को जगाने में उनके आविष्कारशील दृष्टिकोण का प्रदर्शन किया।

REFERENCES

देव, आचार्य नरेन्द्र देव, (2006) *राष्ट्रीयता और समाजवाद* बनारस, ज्ञान मण्डल लि०

देव,आचार्य नरेन्द्र (2008) *समाजवाद – लक्ष्य और साधन* बनारस, ज्ञान मन्डल लि०

कुमार पंकज (2024), *जननायक कर्पूरी ठाकुर एक समाज–शास्त्रीय अध्ययन की प्रस्तावना*, नई दिल्ली, सम्यक प्रकाशन,

राय डा० रामखेलावन, *कर्पूरी ठाकुर और हिन्दी भाषा"*

मेहरोत्रा ममता, (2024) *समाजवाद के जननायक भारतरत्न कर्पूरी ठाकुर* प्रभात प्रकाशन,